International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-11-2023, Accepted: 05-12-2023, Published: 21-12-2023
Volume 9, Issue 6, 2023, Page No. 8-10

'सत्य' और 'अहिंसा' पर केन्द्रित नागार्जुन की कविताएँ

सुनील चौधरी
शोधार्थी, हिंदी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
सत्य और अहिंसा जीवन का वह पहलू है जहाँ से जीवन व समाज को सही दिशा मे संचालित किया जा सकता है। इस शोध–पात्र में सत्य और अहिंसा को नागार्जुन की कविता के बहाने देखने का प्रयास किया गया है। महात्मा गाँधी उस दौर के सत्य के वाहक हैं और अहिंसा के रास्ते एक युग को परिवर्तन की दिशा दिखाते हैं। किस तरह नागार्जुन सत्य के सहारे जनता का साथ देते हैं व जनता के आन्दोलनों को अहिंसा का रास्ता दिखाते हैं। यह भी जानने का प्रयास किया गया है

मूल शब्दः सत्य, अहिंसा, परिवर्तन, समाज, मानवता

'सत्य' की राह पर बढ़ते हुए समाज का सदैव ही विकास हुआ है। साथ ही 'अहिंसा' का रास्ता मानवता का रास्ता है। महात्मा गाँधी एक युग के प्रवर्तक रहे हैं जिनके कार्यों व सिद्धांतों ने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया ऐसा भला कैसे हो सकता था कि गाँधी जी के विचारों का प्रभाव कवि,उपन्यासकार नागार्जुन पर न पड़ता। विजय बहादुर सिंह ने अपनी पुस्तक श्नागार्जुन का रचना संसारश की दूसरे संस्करण की भूमिका में लिखा है कि, 'आग में कूदने का मौका आया तो उसमें भी कूद जाते थे। गाँधी की अगुवाई में चलने वाला स्वदेशी आंदोलन, सन बयालीस का भारत छोड़ो आंदोलन या फिर स्वामी सहजानंद सरस्वती और महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा प्रवर्तित किसान आंदोलन हो, भवानी प्रसाद मिश्र और नागार्जुन ने अपनी जग जाहिर हाजिरी बजाई" और इस हाजिरी की शुरुवात नागार्जुन ने जनवरी 1944 में लिखी कविता 'बापू' से की। जिसमें कि उन्होंने लिखा–

"हो रहा हमसे नहीं कुछ दूर भी
देव तव पद पंक्तियों का अनुसरण
मृत्यु विजयी पितामह तुम से ना हम
सीख पाए अभी जीवन या मरण।"

नागार्जुन उनसे जीवन को जीना और अंत में मरण हो जाने पर भी वह स्थान प्राप्त कर लेना, जिसकी चाह मनुष्य को जीवन भर रहती है। अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था।
गाँधी के यहाँ हिंसा की कोई जगह न थी। उन्होंने अपने सत्याग्रह के विचार में अहिंसा की वकालत की, जो जनसमूह को संगठित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक विधि है। जबकि सत्य उनके दर्शन का आधार था, अहिंसा मार्गदर्शक क़ानून था जिसका पालन प्रत्येक सामाजिक व मानवता को मानने वाले व्यक्ति को करना चाहिए। आगे नागार्जुन ने बताया कि हम तो तुच्छ कार्यो के लिए ही मरे जा रहे हैं एक आप हैं कि सभी जगह नजर बनाये हुए हैं–

"तुच्छ स्वार्थों के लिए ही मर रहे
किंतु फिर भी प्यार से
देव तुम उस पार से
झाँकते हो हमें कारागार से।"

यह झाँकना, इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि मनुष्य कार्य तो करता चलता है लेकिन अपने अंतर्मन में झाँकने की हिम्मत वह नहीं जुटा पाता।

महात्मा गाँधी को समर्पित कर नागार्जुन ने 1945 में ''गाँधी'' शीर्षक से एक कविता लिखी इस कविता से पता चलता है कि नागार्जुन ने गाँधी को इससे पूर्व 1934–35 ई० में पहली बार देखा था और हो सकता है कि निश्चित ही 'सत्य' का मार्ग उन्होंने तभी से अपनाया हो। वे लिखते हैं

"जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ।
जनकवि हूँ साँच कहूंगा क्यों हकलाऊँ।"

और नागार्जुन जीवन भर सत्य की राह को अपनाए ही आगे बढ़ते रहे। उनका रास्ता भी गाँधी का रास्ता रहा और जब आवश्यकता हुई तो अहिंसा का ही सहारा लिया और कलम से आन्दोलन को एक सही दिशा देने की कोशिश की। 'गाँधी' कविता से–

"हाँ लगभग ग्यारह साल बाद
कल मैंने तुमको फिर देखा।"

सारी बातों को ध्यान लगाकर सुना और जी भर कर देखा कि अब कभी आगे देख पाउँगा या नहीं और ऐसा संयोग फिर जीवन भर न बन सका। नागार्जुन लिखते हैं कि–

देखा तुमको भर आँख और भर कान सुना,
कुछ तृप्ति हुई कुछ शांति मिली
बोले तुम केवल पाँच मिनट
चुप रहे आदमी दस हजार बस पांच मिनट।

और उसी एक मंच पर प्रार्थना भी सुनी गयी और नमाज भी देखी और उसी जन सैलाब में नागार्जुन भी महात्मा के बोलने की प्रतीक्षा में रुके रहे। कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

"जय रघुपति राघव राम–राम!
बिस्मिल्लाह हिरहमाने रहीम !
प्रार्थना सुनी, देखी नमाज
फिर भी जनता ज्यों की ज्यों थी।"

उस समय के दौर को जानकार ही आपसी सौहार्द व मानवता की मिसाल देखने को मिलती है। लेकिम आज के दौर में भला ऐसा कहाँ महात्मा गाँधी की हत्या पर नागार्जुन का खून खौल उठा और उन्होंने 'तर्पण', 'शपथ' व 'वाह! गोडसे' जैसी रचनाएँ

लिख डालीं जिनको सरकार ने जब्त कर लिया लेकिन नागार्जुन इन कविताओं की प्रतियां झोले में डालकर बेचते रहे। 1948 ई० में श तर्पणश कविता में नागार्जुन ने उन स्थितियों का जिक्र किया है जिनके कारण गाँधी के हत्यारे को गंगाजल में भी घुटने टेक कर धँस जाने पर भी माफ़ नहीं किया जा सकता। नागार्जुन ने प्रण किया कि वे महात्मा के सत्य','अहिंसा व मानवता के पाठों पर आँच नहीं आने देंगे जो भी आएगा उसकी बिल्कुल नहीं चलने देंगे।

गाँधी का मानना है कि जो हमारी आत्मा कहे वही सत्य है और नागार्जुन की आत्मा सत्य को ही स्वीकार करती है और जब सत्य नजर नहीं आता तो वे अपनी कविता में उन स्थितियों की खूब आलोचना करते हैं। नागार्जुन ने ''शपथ'' कविता में संकेत किया कि बापू आप कितना भी सत्य का पाठ पढ़ा गए लेकिन इन पापियों का कभी भी ह्रदय परिवर्तित नहीं होगा। ये झूठ का ही सहारा लेंगे। हिंसा का ही रास्ता अपनाएंगे । उन्होंने लिखा–

"बापू तुम तर्जनी उठा कर
आसमान से मना कर रहे–देख रहा हूं
पर कितनी भी लंबी हाँकें
ह्रदय नहीं परिवर्तित होगा
क्रूर कुटिलमति, चाणक्यों का
नहीं नहीं कभी नहीं।"

वह दौर अलग दौर था कि प्रेमचंद कि कहानियों के पात्रों का ह्रदय परिवर्तित होता है और वे बेहतर मनुष्य बनने की कोशिश करते हैं। लेकिन आज का दौर बुराई व असत्य का दौर है। इसलिए नागार्जुन शपथ ग्रहण करते हुए कहते हैं कि–

"हाँ बापू, निष्ठापूर्वक में शपथ आज लेता हूँ
हिटलर के ये पुत्र–पौत्र जब तक निर्मूलन न होंगे–
हिंदू–मुस्लिम–सिख फ़ासिस्टों से न हमारी
मातृभूमि जब तक खाली होगी–
सम्प्रदायवादी दैत्यों के विकट खोह
जब तक खंडहर न बनेंगे
तब तक मैं इनके खिलाफ़ लिखता जाऊँगा
लौह–लेखनी कभी विराम न लेगी।"

और बापू की मृत्यु की चर्चा सारे जहां में हो रही है इसका जिक्र भी वे करते हुए नजर आते हैं।

गोडसे पर उनका गुस्सा बिल्कुल अपनी जगह ठीक था। क्योंकि जो लोग उनको पागल कहने में लगे हुए थे उनको यह नहीं करना चाहिए था। गोडसे को संबोधित करते हुए अपनी कविता श्वाह!गोडसेश में नागार्जुन लिखते हैं कि–

"वाह! गोडसे
जिनको तुम पर गुस्सा आया
उन्हें माफ नहीं सरकार करेगी
पकड़कर बंद कर है हाजत में
सजा मिलेगी कड़ी से कड़ी।"

और जिसने जुल्म किया हो उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलनी भी चाहिए।नागार्जुन ने गाँधी को महान माना और उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने का प्रयास किया और साथ ही साथ ''सत्य'', ''अहिंसा'' जैसी कविताएं भी लिखीं।

बापू को महान बताने के साथ ही नागार्जुन समझने का प्रयास करते रहे कि बापू क्या थे? इतना श्रम कहाँ से सीखा, इस प्रकार के विचार कहाँ से पाए? और क्या कभी हम सत्याग्रह की वह लीक कभी अपना भी पाएंगे या नहीं। नागार्जुन ने 1969ई० में ''बतला दो बापू, क्या थे तुम?'' कविता में लिखा–

"बाहर बेदी पीकर जमे रहो
जय–जय हे पूजा के प्रतीक
अपना पाएँगे कैसे हम
फिर सत्याग्रह की वही लीक?"

और नागार्जुन का अंदेशा सच साबित हुआ कि वह सत्याग्रह का रूप फिर कभी देखने को प्राप्त न हुआ। आगे वे इसी कविता में लिखते हैं कि जिस क्रांति शांति के दलदल से आपने हमें निकालने का जो प्रयत्न किया था हम फिर उसी में आकर डूब गए।

इसके बाद 1969ई० में ही लिखी कविता श्तीनों बंदर बापू केश में उनके वैचारिक रूप को किस प्रकार से राजनीतिज्ञों ने, सेठों–साहूकारों ने ग्रहण किया व उनके सिद्धान्तों को मजाक बनाकर रख दिया। जिस गाँधी ने कभी टोपी न पहनी थी उसी गाँधी टोपी व उनके सिद्धान्तों के बिगड़े रूप को समाज के सामने प्रस्तुत कर अनेक लोग अपनी राजनीति की रोटियाँ सेंकने लगे। गाँधी जी ने अहिंसा के सन्दर्भ में कहा कि–"हम भारत को अहिंसा अपनाने की सलाह इसलिए नहीं दे रहे कि कमजोर हैं बल्कि हम तो उसे यह सलाह इसलिए दे रहे कि वह अपनी शक्ति को जानकर ही हिंसा पर अमल करे। मैं चाहता हूँ कि भारत यह महसूस कर ले कि उसमें ऐसी आत्मा है जो कभी भी मर–मिट नहीं सकती। यह शारीरिक कमजोरी से ऊपर उठकर तमाम दुनिया की सारी शारीरिक ताकत को चुनौती से सकती है और विजय प्राप्त कर सकती है।" नागार्जुन ने अंतिम कविता महात्मा गाँधी को समर्पित कर मैथिली में श्गाँधीश शीर्षक से लिखी और बताया कि जब तक यह पृथ्वी रहेगी, सागर रहेगा तब तक गाँधी जीवित रहेंगे उनके विचार जीवित रहेंगे। और इन जुल्मतों के दौर में गाँधी के विचारों का जीवित रहना मनुष्यता का जीवित रहना है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि नागार्जुन ने महात्मा पर जिस प्रकार से कविताएं लिखी उस रूप से ज्ञात होता है कि गाँधी के विचार नागार्जुन के रग–रग में बसते थे और वे उनके लिए महान थे–

"बापू महान, बापू महान
हे सत्य–अहिंसा के प्रतीक।"

और गाँधी ने भी जीवन भर सच का साथ दिया और कमलानंद झा जी लिखते हैं कि, "नागार्जुन ने जिन व्यक्तियों पर सर्वाधिक कविताएँ लिखी हैं उनमें महात्मा गाँधी एक हैं। गाँधी एक इसे व्यक्तित्व का नाम है जो लगातार अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करवाते रहे हैं।" और नागार्जुन भी जीवन भर सच का साथ देते रहे। यही कारण है कि आज भी वे प्रासंगिक हैं

संदर्भ सुचि

1. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 45
2. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 45
3. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 70
4. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 69

5. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 95
6. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 98
7. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–1, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 99
8. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–2, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 42
9. https://www.setumag.com/2019/07/Gandhi-Satya-Ahinsa-Truth-non-violence.html
10. नागार्जुन रचनावली, शोभाकांत, भाग–2, प्रथम संस्करण 2003 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 39
11. कमलानंद झा, नागार्जुनः दबी–दूब का रूपक, पहला संस्करण 2022, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद